साठोत्तरी हिंदी कविता में व्यक्त भूखी पीढी की विद्रोही एवं कामुक संवेदनाएं

माया रानी
एम.ए.हिंदी,यू.जी.सी.नेट. सुपुत्री श्री विनोद कुमार
गाँव–कैरांवाली डा.माखोसरानी
जिला–सिरसा–125055

भूमिका

तत्कालीन पीढ़ी को 'हंग्री जेनरेषन : भूखी पीढ़ी'[1] माना गया। धर्मवीर भारती ने 'तलाष ईष्वर की बजरिए अफीम' लेख में बीट काव्य के 'ग्लेमर' और 'क्रेज' की षव–परीक्षा लेते हुए लिखा– 'कैसी व्यंग्यात्मक परिणति है, वे अपना विद्रोह षुरू करते हैं एक ऐसी दुनिया के खिलाफ जहां बुद्धि और विवेक झूठा पड़ गया है, जहां झूठे मुखौटे और पाखण्डी मूल्य हैं और अन्त में आश्रय पाते हैं एक ऐसी दुनिया में जो अफीम का मारिजुआना या एल0 एस0 डी0 द्वारा उनके लिए कल्पना में निर्मित कर दी गयी है।'[2] इसमें 'न प्रतिभा है, न सच्ची सृजनात्मकता, न अदम्य विद्रोह, न पराज्य की पीड़ा।'[3] मुखौटों से लड़ाई से षुरू आन्दोलन स्वयं एक मुखौटा बनकर रह गया। ष्याम परमार ने बीट कवियों को 'विण्डकाक' माना।'[4] डा0 कुमार विमल के मतानुसार 'बीट जेनरेषन के पास सही अर्थ में आध्यात्मिक और अभौतिक मूल्यों एवं सत्यों के अन्वेशण की कोई भूख नहीं है।[5] डा0 रमानाथ त्रिपाठी ने बीट कविता के संदर्भ में 'भूखी पीढ़ी' लेख में कहा – 'वासना के प्रबल आवेग के समय नारी–अंगो के साथ जो उखाड़–पछाड़ करने की तीव्र, असह्य एवं कश्टदायक तीव्र लालसा जागती है उसी का सत्य वर्णन अधिकाषतः भूखी कविता का सत्यवाद रह गया है . . . जीवन–मूल्यों का निर्धारण क्या आचारहीन इन विक्षिप्तों के द्वारा होगा !'[6]

शमशानी पीढ़ी और अकविता पाश्चात्य कवियों की बीट विचारधारा से प्रेरित है। पूंजीवादी एवं शोषण पर आधारित साठोत्तरी कविता मूल्यों को त्यागती हुई अस्वीकृति को परोसती हैं। लक्ष्मीकान्त वर्मा ने लघुता को कुण्ठा न मानकर 'लघुतम' का 'पोटेन्षल' माना है। एक लघु अस्तित्व की सार्थक मानते हुए कहा है –

'मैं अपना मैं नहीं किसी महान् का उच्छिट मैं नहीं
किसी सम्भाव्य की अनुक्रमणिका नहीं किसी समाप्ति का
समापन चिन्ह नहीं मैं हूं अपने ही लघु अस्तित्व में जन्मा व्यापक परिवेष का साक्षी

---

[1] द्रष्टव्य–लहर, भारतीय काव्यांक '1964' में राजकमल चौधरी का लेख 'हंग्री जेनरेषन : भूखी पीढ़ी।'

[2] पश्यन्ती धर्मवीर : भारती, पृ0 170

[3] वही, पृ0 171

[4] द्रष्टव्य समिधा, अगस्त 1965 में ष्याम परमार का लेख 'बीमार, बुभुक्षित, हिवाकुषा।'

[5] माध्यम, जनवरी '66 में डा0 कुमार विमल का लेख 'बीट जेनरेषन'।

[6] वातायन, मार्च 66, डा0 रामनाथ त्रिपाठी, पृ0 40 – 41

और साक्ष्य प्रज्ञविज्ञ आत्मस्थित क्रियाषील यथार्थवादी निश्षंक प्रबुद्ध मेरी लघुता है परमाणुवादी सार्थकता
क्योंकि मैं अपना मैं नहीं मैं तुम्हारा तुम सब का हूं आत्मस्थित क्रियाषील।[7]

पश्चिम की बीट कविता 'अव्यवस्था' का प्रदर्शन को मान्यता देती है। यह साम्यवादी की भी पक्षधर नहीं हैं। विरोध के लिए विरोध करने में सक्षम कवि ने लिखा है–

'हम ही क्यों वह तकलीफ उठाते जाएं दुःख देने
वाले दुःख दें और हमारे उस दुःख के गौरव की कविताएं
गायें। यह है अभिजात तरीके की मक्कारी इसमें सब
दुःख है, केवल यही नहीं है अपमान, अकेलापन, फाका,
बीमारी।[8]

अस्तित्ववादी वर्ग के काव्य में श्लीलता–अश्लीलता,आशा–निराशा, आदर्श–अनादर्श को अस्वीकारते हुए सभ्यता को भी नकारते हैं। निःसंकोच होकर नग्न शब्दावली का प्रयोग करतें हैं–

'मेरे मन की अंधियारी कोठरी में अतृप्त आकांक्षा की वेष्या बुरी तरह खांस रही है।[9] साहित्यिक परंपरा का प्रतिफलन साठोत्तरी भूखी और क्षुब्ध पीढ़ी 1938 के आसपास वासना की सूक्ष्म छायावादी अभिव्यक्ति को झुठलाकर गदराये नारी बिंबो को महत्त्व प्रदान करती है। अज्ञेय ने पुकारा– 'कहां हो नारी'। दिनकर की पंक्तियां भी इस वासनात्मक कुण्ठा को स्वीकारती हैं –

और वे तरंगमयी नारियां ? पुष्ट देह वाली सुकुमारियां,
सोची गई इतनी कि सोच में समा गईं
स्थूल से निकल सूक्ष्म कल्पना में छा गईं

नारी अब स्वप्न है, विचार है,[10] दिनकर ने छायावाद के दमित काम–बोध को अप्रासंगिक मानते हुए'उर्वशी' की रचना की। 'उर्वशी' में कामुकता की सभी मादक अभिव्यक्तियां चित्रित हैं,नारी के मदमाते अंगों एवं मदन व्यापारों के नग्न चित्र हैं। धर्मवीर भारती ने भी 'इन फीरोजी होठों पर बरबाद मेरी जिंदगी' जैसी क्षयी पंक्तियां लिखकर दमित वासना को स्वीकृति दी। गिरिजाकुमार माथुर का कवि जीवन की अनिवार्य शर्त काम को भूल नहीं पाया है, वह कहता है –

'तूने पीछे से आकर मुझको चूम लिया मैं तुझे
चूमने को थोड़ा सा घूम लिया बस, जी हल्का हो गया आ गया
फिर से वापस, कागज–पत्तुर–फाइल की खिदमत पर।[11]

कई समीक्षकों ने इस रूमानी भाव को देखकर नव–रोमानवाद के आरंभ होने के प्रति आगाह किया और इससे बचकर रहने की चेतावनी दी। मनोवैज्ञानिक निष्क्रितियों, फ्रायड–एडलर–युंग की नव–रोमानवाद की पतनशील

---

[7] अतुकान्त : लक्ष्मीकान्त वर्मा, पृ0 11

[8] सीढ़ियों पर धूम में : रघुबीर सहाय, पृ0 107

[9] नयी कविता, अंक 1 : अनंत कुमार पाशाण, पृ0 63
[10] शुद्ध कविता की खोज, पृ0 270

[11] सीढ़ियों पर धूप में : रघुवीर सहाय, पृ0 152

मांसल कामुकता विवचे नाओं के प्रभाव मे ं आकर कवियों ने इसे अपनाया। जैस–े 'वृक्ष ! पूछूं

किसलिए निःषब्द तुम
इतने सटे से निर्वसन,
निष्चेश्ट,
गुरु भू–वक्ष से –
जैसे कि बर्फ ? बर्फ ! पूछूं
किसलिए निःषब्द तुम
इतनी सटी–सी
निर्वसन निष्चेश्ट,
दृढ़ गिरि–वक्ष से –
जैसे कि चांद ![12]

हिन्दी सृजन पर इनका गहन प्रभाव पड़ा। काम–सबं धं ी मान्यताओ ं को आधार बनाकर जैनेन्द्र का उपन्यास 'त्यागपत्र' अज्ञेय का 'शेखर एक जीवनी' और 'नदी के द्वीप' की रचना हुई।

स्वच्छंद काम–संबधं ा और अनेक स्त्री–पुरुष के बीच अनाम सबं धो ं को मान्यता हिंदी कहानी में भी दी गई। काम–विषयक रुग्ण प्रवृत्तियां इन कवियो ं के लेखन का आधार बनी। इसलिए निराला के साहित्य में भी स्त्री रंगीन, काम–विमुख, ठंडी या यों कहे ं कि फ्रिजिड नहीं हैं. वे चंचल हैं. कामुक हैं, प्रेम मे ंपहल करती है.।[13] इनके विरोध की अवधारणा है–वासना और आर्थिक तंगी। नयी पीढ़ी दोनों अवधारणाओ ं की भूखी है। वह वासना की व्यवस्था के विरुद्ध है और अर्थव्यवस्था को भी स्वीकार नहीं करती।

'औरत : आंचल है।
जैसा कि लोग कहते हैं – स्नेह है,
किंतु मुझे लगता है – इन दोनों से बढ़कर
औरत एक देह है।[14]
– – –
एक संपरू ्ण स्त्री होने के पहले ही
गर्भाधान की क्रिया से गुजरते हुए उसने जाना कि प्यार
घनी आबादी वाली बस्तियों में मकान की तलाश है
हर लड़की
तीसरे गर्भपात के बाद
धर्मशाला हो जाती है।[15]

---

[12] तीसरा सप्तक : प्रयागनारायण त्रिपाठी (सं0 अज्ञेय), पृ0 9 – 10 (तृतीय संस्करण)

[13] निराला'परिमल' पृ0 56

[14] कल सनु ना मझु े, पृ0 50

[15] संसद से सड़क तक, पृ0 9

डा0 सुरेष सिन्हा के अनुसार ये कविताएं आस्था और संकलन मात्र हैं तथा 'इनमें . . . .नए मूल्यों की मर्यादित प्रतिशठा प्राप्त हुई है।'[16] कवि इस ओर सचेत कुण्ठा से मुक्त है –

'हम अतृप्त
हमें तृप्ति दो
पूर्ण हमारी रति हो
हम कुंठित हैं
हमें मुक्ति दो
हम वंचित हैं
सहज प्राप्ति का हमें इश्ट दो।[17]

युयुत्सावादी कविता में घोषित किया, 'आवष्यकता है गलता हाथों की पकड़ से यान्त्रिकता को मुक्त कराने के लिए सन्तुलित विद्रोह की। विद्रोह : जो एक विचारधारा के व्यक्तियों द्वारा चिन्तन के स्तर पर हो।'[18] युयुत्सावाद के संदर्भ में श्री रामसिंह ने लिखा–'आज कहीं भी समवेत नहीं है – नही रहा। केवल युयुत्सवः है। और वह तथ्य है – प्रत्यक्षतः एक प्रिय तथ्य।'[19] इनके विचार में युयुत्सा 'सनातन' एवं एक 'आदिम स्वभाव' से सम्बद्ध कविता है,जिसकी आधारषिला 'आधुनिकता की निर्दिषायामी दृश्टि' है। लक्ष्मीकान्त वर्मा ने ताजी कविता की स्थापना 'ताजी कविता' : कुछ जोड़ बाकी' आलेख के आधार पर किया तथा काव्यानुभूति की पहली षर्त को उसकी रागात्मकता माना।[20] डा0 नगेन्द्र ने इसे अनगढ़ कविता कहते हुए लिखा है, 'इनके अनगढ़पन में सौन्दर्य की गहरी छवियां भी झलक उठती हैं और इनकी गद्यात्मकता में यत्र–तत्र भावना के निर्मल संकेत मिल जाते हैं।[21] सर्वेष्वरदयाल सक्सेना ने स्वीकारा 'कविताओं में मंजाव और कलात्मक उपलब्धि का न होना इनकी षक्ति है।[22]एक उदाहरण द्रश्टव्य है–

'मैंने जब भी
एक वृहत कैनवस पर
तुम्हें अंकित करना चाहा है
तब तब
एक विकृत चेहरा
इस बीच छप जाता है. . .
षायद

---

[16] दिविक : डा0 सुरेष सिन्हा, फ्लैप पर 'सं0 सुखबीर सिंह।
[17] समीप और समीप : रमेष कौषिक, पृ0 41
[18] युयुत्सा, अक्तुबर '66, सम्पादकीयवत्।
[19] वही, दिसम्बर 66, षलभ श्रीराम सिंह, पृ0 90
[20] क, ख, ग, अंक 13 : लक्ष्मीकान्त वर्मा, पृ0 50
[21] दिविक : डा0 नगेन्द्र, फ्लैप पर सं0 सुखबीर सिंह।
[22] दिविक : सर्वेष्वरदयाल सक्सेना, फ्लैप पर सं0 सुखबीर सिंह।

यह हमारे और तुम्हारे बीच का
सम्बन्ध दानव है।[23]

अस्वीकृत कविता कहने वालों में श्रीराम षुक्ल मुख्य हैं। उनके अनुसार साहित्यकार कविता लिखने की बजाये कविता का एक धोखा खड़ा करते हैं। उन्होंने अस्वीकृत कविता‘मरी हुई औरत के साथ सम्भोग’[24] लिखी। अस्वीकृत कविता ‘षार्टमूड’की वृत्ति लिए हुए है। मुद्राराक्षस के मतानुसार यह कविता पाठकों के लिए नहीं लिखी गई, क्योंकि पाठक–वर्ग मूर्ख होता है।[25] मोहन गुलाटी लिखते हैं –

‘नर मुंड पहने हुए और नाचते हुए और भागते हुए अपने कंठ को
समूचा निगल जाती हैं और अनजाने छू लेती हो विवस्त्र शिवलिंग
छाती में होता है विकंप और प्रकंपन से
अर्राता है एक रीछ
जंगलों को ढूंढ़ता हुआ।[26]

कवि वर्ग ‘विवसत्र शिवलिंग’ को छूना, ‘छाती में विकल्प होना’,एवं ‘जंगलों को ढूंढ़ता हुआ रीछ’ में वासना के नंगे नाच का बिंब प्रस्तुत करता है। निर्भय मल्लिक की काव्यानुभूति का उदाहरण प्रस्तुत हैं –

‘सुनो दोस्तो। मरने के बाद। मेरी लाश पर वीर्यपात कर मूत देना। और किसी रजस्वला औरत। के कपड़े में लपेटकर। पार्लियामेंट के घर में फेंक देना। कहां मिलेगी इतनी बड़ी मुर्दों की भीड़ और इतनी बड़ी कब्रगाह हिंदुस्तान।[27] इस संस्कृति को नंगी शैली में व्यक्त करके अकविता,श्मशानी कविता आदि काव्य–प्रवृत्तियां असमाजिकता प्रमाणित नहीं करना चाहते। डॉ0विश्वम्भरनाथ, उपाध्याय, राजकमल,लीलाधर जगूड़ी और सौमित्र मोहन ने आर्थिक व्यवस्था को विरोध का लक्ष्य बनाया। राजकमल की तरह अन्य व्यक्तिवादी, अस्तित्ववादी कवियों ने यौनगत पतन को ही चित्रित नहीं किया,बल्कि राजनीति, सभ्यता,संस्कृति एवं एक पूंजीवादी समाज को आधार बनाया। अंतर्विरोधों के कारण उत्पन्न भूख, अभाव, अत्याचार,विवशता एवं इंसानियत की पीड़ा के बिम्ब

भी प्रस्तुत किये। लीलाधर जगूड़ी की पंक्तियां देखिए –

‘इस व्यवस्था में हर आदमी
कहीं–न–कहीं चोर है सूचना विभाग के हर
पोस्टर पर खुशहाली है। चारों ओर
कंगाली के पास। आटा नहीं
गाली है।
और जिस पर कोई नहीं
खाना चाहता
आजादी एक झूठी थाली है।’

---

[23] दिविक : कृश्ण कुरड़िया, पृ0 15 सं0 सुखबीर सिंह।

[24] द्रष्टव्य–उत्कर्श, जुलाई, 66

[25] कविताएं, जून ’62 : मुद्राराक्षस, पृ0 22

[26] कृति परिचय, (अकविताकं), पृ0 57–58

[27] श्मशानी पीढ़ी 6, पृ0 27

यह उदाहरण देश की राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक चारित्रिक पतन को नग्न रूप में दर्शाती है। जगदीश चतुर्वेदी एवं श्याम परमार अकविता और श्मशानी कविता के विख्यात कवि हैं। उनकी कविता में यौन–बिम्बों की वीभत्सता अधिकता है। नये आंदोलन के समर्थक धूमिल की पंक्तियां दृष्टव्य हैं –

‘हर तरफ धुंआ है। हर तरफ कुहासा है। जो दांतो और
दलदलों का दलाल है। वही देशभक्त है। अंधकार में सुरक्षित होने का
नाम है तटस्था।

हर तरफ कुंआ है, हर तरफ खाई है। यहां, सिर्फ, वह
आदमी, देश के करीब है। जो या तो मूर्ख है। या फिर गरीब है।[26]

पूंजीवादी व्यवस्था में जनसामान्य व्यवस्था बदलना चाहता है–

‘मुझमें भी आग है। मगर वह भभक कर बाहर नहीं आती।

क्योंकि उसके चारों तरफ चक्कर। काटता हुआ। एक
पूंजीवादी दिमाग है। जो परिवर्तन तो चाहता है। मगर
आहिस्ता–आहिस्ता।[29]

– – –

जनता ने नेताओं को परखा, कभी बुद्धिजीवियों से याचना की,–सब बेकार गया। धूमिल जी लिखते हैं –

‘मैंने हर एक को आवाज दी। हर
एक का दरवाजा खटखटाया। मगर बेकार। मैंने
जिसकी पूंछ। उठाई है उसको मादा।
पाया है।

– – –

वे वकील हैं। वैज्ञानिक हैं। अध्यापक हैं।
नेता हैं। दार्शनिक। हैं। लेखक हैं। कलाकार हैं।
यानि कि ... कानून की भाषा बोलता हुआ।
अपराधियों का एक संयुक्त परिवार है।[30] निष्कर्ष

कहा जा सकता है कि अशोक वाजपेयी, राजीव सक्सेना, वेणु गोपाल, ओमप्रकाश, निर्मल, कुमारेन्द्र, पारसनाथ आदि कवि पूंजीवादी व्यवस्था में जनवादी संवेदनशीलता, घिनौने जीवन की कुरूपताओं को उजागर करते हैं। सेक्स के विषय में उत्तर छायावाद से सातवें दशक तक प्रायः सभी कवियों ने स्वच्छंदता प्रदान की। ‘रेने जेनाँ ने ‘द एरर ऑफ सायकॉलोजिज्म’ में

[29] सुदामा पाण्डे धूमिल पटकथा पृ0 56

[30] 30 सुदामा पाण्डे धूमिल पटकथा पृ0 41

---

[26] सुदामा पाण्डे धूमिल पटकथा पृ0 16

स्वीकार किया है कि ''उन्नीसवीं सदी के भौतिकवाद ने मानव मन को ऊर्ध्व दर्शन से विमुख बना दिया और बीसवीं सदी के मनोविज्ञान ने उसे अधोदर्शन के लिए सहसा उन्मुक्त कर दिया।''[27] छायावाद के बाद दो दशकों तक सवे स के अधोदर्शन के प्रति 'वितृष्णामूलक आक्रोश' पैदा हुआ। सवे स के दायरे में नंगेपन को महत्त्व दिया। पूंजीवादी व्यवस्था व्यक्तिवाद और व्यक्ति की स्वतंत्रता पर अपना नियंत्रण भी रखती है। व्यक्ति की स्वतंत्रता को महत्त्व देने वाले समीक्षकों ने इसके प्रति विद्रोह किया हैं।'जीवन को गहराई से पकड़ना और उसे जड़ता से मुक्त कर चैतन्य की ओर ले जाना है।'[32]

---

[27] समीक्षा लाके – प्रो0 भगीरथ श्रीवास्तव, प्राक्कथन, पृ0 1 [32] चौराहे पर 'भूमिका' : आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी।